बीज की बुवाई कर बीज से बीज की दूरी 01 से.मी. रखना चाहिए।

रोपणी अवस्था में बीमारी एवं बचाव

रोपणी अवस्था में इसके पौधों को प्रारंभिक तौर पर अत्याधिक देखभाल की आवश्यकता होती है। यह धीमी गति से वृद्धि करने वाला होता है। अतः इसे अत्याधिक धूप एवं तेज सर्दी से बचाना अत्यंत आवश्यक होता है। इसकी पत्तियों पर कभी कभी छोटे छोटे छिद्र देखे गए हैं जिसे एन्डोसल्फॉन के 01 प्रतिशत के घोल के छिडकाव एवं मिट्टी में बैविस्टीन पावडर का 01 प्रतिशत घोल का छिडकाव कर रोकथाम की जा सकती है।

पॉटिंग मिश्रण

रेत+मिट्टी+ गोबर खाद को समान मात्रा में लेकर उसमें 02 ग्राम पोटाश प्रति पौलीथिन बैग में लेकर पौध रोपण किया जाना चाहिए।

पॉलीथिन का माप

नर्सरी बेड से पौधों के रोपण हेतु पॉलिथिन का माप 15x25 सेमी होना चाहिए। नर्सरी बेड से पॉलीथिन में पौध रोपण करते समय अत्यंत सतर्कता की आवश्यकता होती है। अर्थात् रोपण करते समय जड़ को आसपास की मिट्टी सहित निकाल कर ही पॉलीथिन बैग में रोपित करना चाहिए अन्यथा पौधे के मृत होने की संभावना अधिक रहती है।

उपयोग

आयुर्वेदिक औषधि में यह वृक्ष कई तरह से उपयोगी है जैसे इस वृक्ष की छाल का उपयोग खून से संबंधित बीमारियों के उपचार में, बुखार, पेट में दर्द, जलन, सूजन, मांसपेशियों में दर्द, विषाक्त, कफ एवं कामोत्तेजक औषधि तैयार करने में किया जाता है। इसकी पत्तियों एवं फल का उपयोग पेट के छाले एवं उससे होने वाले दर्द को कम करने में किया जाता है। इसके तने एवं छाल में फ्लेवोनाईड, ग्लायकासाईडस एवं टेनिन के साथ कई तरह के एल्कलाईडस पाए जाते हैं जिसके कारण इससे तैयार किए गए सत्त का प्रयोग पेट के अंदर होने वाले कीडे को मारने में काफी प्रभावशील पाया गया है।

अन्य

वैज्ञानिक सेंट जॉन ने इसके तने एवं छाल से तैयार सत्त को चिंता, घबराहट दूर करने के लिए औषधि के तौर पर प्रमाणित किया जिसे उन्होने डायजेपाम नाम की दवाई को बिना किसी दुष्प्रभाव के तौर पर साबित किया।

संपर्क

डॉ. अर्चना शर्मा

वैज्ञानिक

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र)

(0761) 2666529, 2665540

मुण्डी बीज
एवं रोपणी तकनीक

(मित्रागायना पार्वीफ्लोरा)

बीज प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.) 482008

मुण्डी-बीज एवं रोपणी तकनीक

प्रजाति का नाम मुण्डी, केम
वानस्पतिक नाम मित्रागायना पार्वीफ्लोरा

परिचय

यह रूबिएसी कुल का वृक्ष है।

पहचान

यह मध्यम आकार का पर्णपाती वृक्ष होता है। इस वृक्ष की छाल धूसर गहरे रंग की एवं पत्तियां छोटी होने के कारण आसानी से पहचाना जाता है। इसके फूल हरे–पीले रंग की गोलाकर सिरे वाले देखने में काफी खूबसूरत होते हैं। इसके फल गोलाई लिए हुए सिरों पर नुकीले होते हैं जो कि पकने पर धूसर काले रंग के दिखाई देते हैं।

प्राप्ति स्थान

यह भारत के सूखे एवं गर्म क्षेत्रों में पाया जाता है। मध्य प्रदेश में यह सागर दमोह होशंगाबाद एवं बैतूल जिले में पाया जाता है। मुख्य रूप से यह एशिया एवं मलेशिया में पाया जाता है। इस प्रजाति में पुनरोत्पादन की क्षमता कम होने के साथ साथ विनाशविहीन विदोहन होने के कारण आई.यू.सी.एन. की सूची में इसे क्षेत्रीय स्तर पर (LC) विलुप्त होने की श्रेणी में रखा गया है।

स्थानीय कारक(Locality Factor)

यह उष्ण एवं उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु में पाया जाता है इसके साथ ही यह गहरी रेतीली चिकनी बलुई मिट्टी में अच्छी वृद्धि करता है।

बीज चक्र

इस वृक्ष में बीज प्रतिवर्ष उत्पादित होता है।

ऋतुजैविकी (Phenology)

इसके फूल मई से जुलाई के मध्य वृक्ष पर लगते हैं। जबकि फल नवंबर से मार्च के मध्य पककर तैयार होते हैं एवं बीज का संग्रहण मार्च माह में किया जाना चाहिए।

प्रतिकिलो बीजों की संख्या

एक किलोग्राम में बीजों की संख्या 7000 से 7500 तक पायी जाती है।

जीवन क्षमता अवधि

सामान्य स्थिति में बीज की जीवन क्षमता अवधि लगभग 12 से 18 माह तक होती है।

सुसुप्तावस्था

बीज में कठोर कवच के कारण बाहरी सुसुप्ता अवस्था देखी गई है जिसे बुवाई पूर्व प्रारंभिक उपचार द्वारा समाप्त किया जा सकता है।

अंकुरण क्षमता

ताजे बीज में 8 से 10 प्रतिशत तक अंकुरण क्षमता पायी गई है।

पौध प्रतिशत

अनुपचारित बीज में अंकुरण 08 से 10 प्रतिशत होने के कारण पौध प्रतिशत 04 से 05 प्रतिशत तक पायी गई। परंतु उपचारित बीज में अंकुरण 62 से 65 प्रतिशत होने के कारण पौध प्रतिशत 40 से 45 प्रतिशत तक पायी गई।

उपयुक्त भंडारण विधि

इसके फलों को कम तापमान अर्थात् 4 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान पर भण्डारित कर उससे बीज प्राप्त करने पर 15 से 18 माह पश्चात् भी अनुपचारित बीज में 36 प्रतिशत तक अंकुरण प्राप्त होता है। जो कि सामान्य भण्डारण में 09 माह में 4 प्रतिशत एवं 12 माह में शून्य हो जाता है।

उपयोगिता की अवधि

सामान्य भण्डारण की स्थिति में बीज संग्रहण के 06 माह के अंदर उपयोग कर लिया जाना चाहिए।

बुआई पूर्व उपचारण

बुवाई के पूर्व बीज को 96 घंटे तक ठंडे पानी में डुबोकर रखने के पश्चात् बुवाई करने पर अंकुरण प्रतिशत 62 से 65 प्रतिशत तक प्राप्त होती है जो कि अनुपचारित बीज में मात्र 08 प्रतिशत होती है।

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम

बीज को बारीक महीन रेत में बुवाई करना उपयुक्त होता है क्योंकि इसके बीज काफी छोटे होते हैं एवं मिट्टी में बुवाई करने पर इनका भ्रूण मर जाता है।

बुआई का समय

बीज की बुआई मार्च से मई के मध्य की जानी चाहिए।

100 पौधे हेतु आवश्यक बीजों की मात्रा

100 पौधों को तैयार करने हेतु 50 से 60 ग्राम बीज की आवश्यकता होगी।

बुआई हेतु उपयुक्त विधि

बीज की बुवाई के लिए क्यारी के स्थान पर जर्मिनेशन ट्रे का प्रयोग करना चाहिए। जिसमें बारीक महीन रेत भरकर 01 से.मी. की गहराई में